आधुनिक महिला उपन्यासकारों के प्रतिनिधि उपन्यासों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन
(सन् 1970—आज तक)

दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग़
आगरा की हिन्दी विषय की पी—एच.डी.
उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की

'रूपरेखा'

सन्—2015

निर्देशिका :

प्रो. शर्मिला सक्सेना
हिन्दी विभाग
कला संकाय

शोधार्थिनी :

रचना कुशवाह
एम.ए., एम.फिल् (हिन्दी)

हिन्दी विभागाध्यक्ष

प्रो. शर्मिला सक्सेना

कला संकाय प्रमुख

प्रो. रागिनी रॉय

(हिन्दी विभाग — कला संकाय)
दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग़
आगरा— 282005

आधुनिक महिला उपन्यासकारों के प्रतिनिधि उपन्यासों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन
(सन् 1970–आज तक)

शोध परिचय

साहित्य और समाज एक दूसरे से घनिष्ठता से जुड़े हुये है। साहित्य समाज का दर्पण बनकर समाज की विद्रूपताओं का प्रतिबिम्ब दिखाता है और कभी समाज का मार्गदर्शन करते हुए विद्रूपताओं से संघर्ष करने की प्रेरणा देता है। जो कुछ समाज में घटित होता है साहित्यकार अपनी लेखनी के माध्यम से उसे अभिव्यक्त करता है। वह अपने भोगे हुए अनुभवों को यथातथ्य रूप से साहित्य में प्रस्तुत करता है।

विभिन्न क्षेत्रों के भिन्न–भिन्न रुचि वाले व्यक्तियों को उसके विविध स्वरूपों के साथ अपने में समाहित करने की अपार शक्ति उपन्यास विधा में होती है। प्रारम्भ में नीति प्रधान, घटना प्रधान और ऐतिहासिक उपन्यास लिखे गये। इसके बाद व्यक्तिपरक, सामाजिक उपन्यासों की रचना हुयी। प्रेमचन्द ने सामाजिकता के चित्रण के साथ–साथ पात्रों के व्यक्तिगत चित्रण पर भी बल दिया, इसी समय मनोविश्लेषण का प्रभाव साहित्य पर पड़ने लगा जिससे उपन्यास विधा में भी परिवर्तन आया और फ्रायड, एडलर, युंग के सिद्धान्तों के परिणाम स्वरूप समाज की अपेक्षा व्यक्ति को महत्व दिया जाने लगा और व्यक्तिपरक उपन्यासों की रचना होने लगी।

मनोविश्लेषणवाद के जनक फ्रायड, एडलर और युंग है। फ्रायड ने यह प्रतिपादित किया है कि मनुष्य के मानस में 'अवचेतना' का अंश अधिक है और चेतना का अंश तुलनात्मक रूप से कम है। मनुष्य की मूल प्रवृत्तियों का कोश 'अवचेतन' है, 'अवचेतन वृत्तियाँ', 'अबाध तोष' की ओर उन्मुख रहती है। समाज और संस्कृति का प्रभाव चेतन मन पर पड़ता है। अतः वह इन वृत्तियों का दमन करता है क्योंकि इनकी अबाध स्वीकृति में असामाजिकता और संस्कृति हीनता का प्रश्न उठता है। फ्रायड ने इन प्रवृत्तियों को 'काममूलक' माना है। अतृप्त काम वासनाओं का यदि दमन किया जाता है तो वे मरती नहीं है बल्कि 'अवचेतन' में जाकर अवस्थित हो जाती हैं और उस अवसर की ताक में रहती है जब वे अपना अबाध परितोष पा सकें।

मनोविश्लेषण 'फ्रायड' द्वारा खोजी गयी वह मानसिक चिकित्साविधि है जिसकी सहायता से मानसिक रोगों का उपचार सरलता से किया जा सकता है और जिसका प्रभाव स्थायी होता है। अज्ञात मन के अन्तर्द्वन्द्व तथा भावना ग्रन्थियों का ज्ञान इस विधि के द्वारा सहज ही होता है।

एडलर ने मानव के मन में उत्पन्न 'हीन भावना' को मन की परिचालिका शक्ति माना है। हीनता की अनुभूति मनुष्य के मन में 'अहं' भाव को जन्म देती है और इससे परिचालित होकर वह अपने महत्व को अनुभव करने एवं कराने की आवश्यकता अनुभव करते हुए तद्नुसार आचरण एवं व्यवहार करता है। 'युंग' के अनुसार मनुष्य की स्मृतियाँ मानसिक कार्य व्यापार को चेतन मन में एकत्रित नहीं रख पाती और वे अचेतन में चली जाती है। अचेतन मन में दमित रहने वाली अनुभूतियाँ, स्मृतियाँ एवं विचार 'अहं' को स्वीकार्य नहीं हो पाते, परिणामतः वहाँ भय, आशंका, मृत्यु जैसी स्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं जिससे मनुष्य का जीवन प्रभावित होता है।

हिन्दी साहित्य में जो परंपरा जैनेन्द्र, अज्ञेय, इलाचन्द्र जोशी ने प्रारम्भ की थी इसके प्रभाव आज भी आधुनिक युग की महिला उपन्यासकारों के प्रतिनिधि उपन्यासों में देखे जा सकते हैं। यद्यपि आपने उपन्यासों का सृजन मनोविज्ञान को केन्द्र में रखकर नहीं किया तदपि मनोवैज्ञानिकता का प्रभाव आपके कतिपय उपन्यासों और उनके पात्रों पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। प्रस्तुत लेखिकाओं ने मानव मन की परतों को खोलने का प्रयास किया है साथ ही मानव मन की दमित कुण्ठाओं को भी स्पष्ट रूप से उकेरा है। आज का मानव जीवन इतना सरल नहीं रहा है, उसकी जटिलता को उपन्यास विधा के द्वारा अभिव्यक्ति की गयी है। प्रस्तुत उपन्यासों को मनोविश्लेषणात्मक दृष्टि से विश्लेषित करना ही मेरे शोध कार्य का प्रमुख उद्देश्य है।

मनोविज्ञान मन का विश्लेषण करता है मानव का आंतरिक व्यवहार ही उसके बाहरी व्यवहार का प्रेरक और परिचालक है। अन्तर्मन के अतल में दबी प्रवृत्तियाँ वैयक्तिक जीवन को ही नहीं अपितु सामूहिक जीवन को भी प्रभावित करती है। मानव की मूल परिचालिका शक्ति इन्हीं दबी हुए प्रवृत्तियों को मानना चाहिए। हिन्दी की प्रमुख लेखिकाओं द्वारा लिखे उपन्यासों में मनोविज्ञान को एक अस्त्र के रूप में प्रयोग किया गया है, जिसकी

सहायता से वे व्यक्ति का इलाज कर उसके मानस को स्वस्थ बनाने पर बल देती है मनोविश्लेषण के द्वारा वे मानव मन के अन्दर प्रवेश करके, मन में दबी विकृतियों एवं ग्रन्थियों की निर्ममता से चीर–फाड़ करती है और समाज के सामने लाकर उनके व्यवहार का विश्लेषण करती हैं।

प्रस्तुत शोध विषय की प्रेरणा व चयन–

साहित्य के किसी भी विषय को शोध अध्ययन का आधार बनाने से पहले उसकी पूरी अवधारणा व विविध प्रतिमानों से परिचित होना पड़ता है। मनोविज्ञान के प्रति मेरी रुचि प्रारम्भ से ही रही है इसीलिए मैंने बी०ए० में इसका अध्ययन 'प्रमुख विषय के रूप में किया। जब मैं उपन्यासों को पढ़ती थी तो उन्हें मनोविज्ञान की दृष्टि से विश्लेषित करती थी। इसलिए पी–एच० डी० में नामांकन हो जाने के उपरान्त मैंने 'आधुनिक महिला उपन्यासकारों के प्रतिनिधि उपन्यासों का मनोविश्लषणात्मक अध्ययन (सन्–1970–आज तक)' विषय को अपने शोध का आधार बनाया। इसके उपरान्त प्रस्तुत विषय के निर्धारण एवं रूपरेखा के निर्माण में मेरी शोध निर्देशिका प्रो० शर्मिला सक्सेना ने सहायता की। तदुपरान्त विषय से सम्बन्धित सामग्री संचयन हेतु में 'केन्द्रीय हिन्दी संस्थान' आगरा, गयी। अम्बेडकर विश्वविद्यालय एवं दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट के पुस्तकालय में कई बार गयी और वहाँ मैंने अध्ययन किया। इसके साथ ही संचार माध्यम 'इंटरनेट' ने भी सामग्री संचयन में मेरी सहायता की। इसके उपरान्त मैंने अपने गुरुजनों से इस विषय पर कार्य करने के लिए वार्ता की और सभी से वार्ता करने के उपरान्त 'आधुनिक महिला उपन्यासकारों के प्रतिनिधि उपन्यासों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन (सन् 1970–आज तक)' विषय पर शोध कार्य करने का निश्चय किया।

प्रस्तुत शोध विषय का उद्देश्य–

इस अनुसंधान के माध्यम से आधुनिक महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करके मानव के बदलते परिवेश के कारण जीवन की जटिलता, संघर्षों को अभिव्यक्त करने की सफल कोशिश की गयी है आधुनिक युग की बदलती परिस्थितियों के कारण मानव में कुण्ठा का जन्म हुआ है इन कुण्ठाओं का यदि निराकरण नहीं किया जाता तो मनोरोग हो जाता है जो समाज के लिए हानिकारक है। स्वस्थ्य

समाज का निर्माण करने में उसकी दिशा निर्धारित करने में इन उपन्यासों का महत्वपूर्ण योगदान है। वस्तुतः कुण्ठारहित मन स्वस्थ समाज के निर्माण में सहायक हो सकता है, एक नवीन दिशा दे सकता है एवं मूल्यों के बदलाव को उकेरने में सहायक सिद्ध हो सकता है। लेखिकाओं ने अपने मन की परतों को खोलने का सफल प्रयास किया है इन्होंने किस तरह से मानवमन की ग्रन्थियों का खोलने का प्रयास किया है इनके पात्र और चरित्र की दृष्टि से भी उपन्यासों का विश्लेषण किया है। इसलिए इन सभी उपन्यासों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन करना मेरे शोध कार्य का उद्देश्य है। मनोविज्ञान के विभिन्न पहलुओं को समग्र रूप से अध्ययन करके महिला लेखिकाओं के उपन्यासों को समाज के समक्ष प्रस्तुत करना मेरे शोध कार्य का एक उद्देश्य है। इसके अलावा हिन्दी साािहत्य को मनोविज्ञान के साथ जोड़ना भी मेरा एक उद्देश्य है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध में यह बताने की भी चेष्टा की गई है कि मनोविश्लेषण का प्रभाव हिन्दी उपन्यासों पर किस प्रकार पड़ा उसने उपन्यासों के कथ्य में किस प्रकार परिवर्तन किये। मनोविश्लेषण की पद्धति मूल रूप से पाश्चात्य विचारकों की देन है उसके बाद ही हिन्दी में मनोवैज्ञानिक उपन्यासों का सृजन हुआ। इसी विकास क्रम में यद्यपि सम्पूर्ण उपन्यास मनोवैज्ञानिक नहीं है तदपि मनोविश्लेषण की विविध पद्धतियाँ उपन्यासों में पायी जाने लगी हैं। इन लेखिकाओं ने मनोविज्ञान का सूक्ष्मता से प्रयोग किया है। पात्र और चरित्र–चित्रण की दृष्टि से भी इन उपन्यासों का अध्ययन किया जायेगा और भाषा तथा शैली की दृष्टि से उपन्यासों का विश्लेषण किया जायेगा साथ ही लेखिकाओं के उपन्यासों की महत्ता को भी विश्लेषित किया जायेगा।

शोध विषय का महत्व–

गद्य साहित्य की उपन्यास विधा अभिव्यक्ति के एक सशक्त माध्यम के रूप में उभरा है जो सर्वसाधारण को अपनी ओर आकर्षित करता है। उपन्यास में मानव के सम्पूर्ण चरित्र का विका सहजता से किया जा सकता है इसलिए इसका महत्व और बढ़ जाता है। प्रस्तुत शोध विषय में आधुनिक प्रमुख महिला उपन्यासकारों के प्रतिनिधि उपन्यासों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। आधुनिक युग के बदलते हुए परिवेश में व्यक्ति के भीतर अनेक कुण्ठाओं का जन्म हुआ है इनकी सफल अभिव्यक्ति आधुनिक महिला

उपन्यासकारों के उपन्यासों में मिलती है उन्होंने कुण्ठाओं के चित्रण के साथ–साथ उनको दूर कर स्वस्थ जीवन के उपाय भी प्रस्तुत किये है। उन्होंने बताया है कि कुण्ठित व्यक्ति और मस्तिष्क समाज के बेहतर विकास में सहायक नहीं हो सकते यदि कुण्ठित मन और मस्तिष्क वाला व्यक्ति समाज को बदले में चिन्ता ही देता है।

आधुनिक लेखिकाओं में मन्नू भण्डारी (आपका बंटी), ममता कालिया (बेघर), कृष्णा सोबती (सूरजमुखी अँधेरे के), मृदुला गर्ग (चित्तकोबरा, कठगुलाब), दीप्ति खण्डेलवाल (वह तीसरा), सूर्यबाला (मेरे संधीपत्र), चन्द्रकांता (बाकी सब खैरियत है), उषा प्रियंवदा (शेष यात्रा), नासिरा शर्मा (शाल्मली), प्रभाखेतान (छिन्नमस्ता), अमृता प्रीतम (जलते बुझते लोग), मैत्रेयी पुष्पा (इदन्नमम, चाक), अलका सरावगी (कलि–कथाः वाया बाईपास), सुषमा मुनीद्र (छोटी सी आशा), कुसुम कुमार (पूर्वी द्वार) डॉ० नमिता सिंह (लेडीज क्लब), अनामिका (दस द्वारे का पींजरा), जयाजादवानी (तत्त्वमसि), गीतांजलि श्री (तिरोहित) प्रमुख है।

मन्नू भंडारी ने 'आपका बंटी' बाल मनोविज्ञान का बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया है। फ्रायड ने कामवृत्ति को महत्त्वपूर्ण माना है। इसी कामवृत्ति का विश्लेषण आधुनिक युग की महिला उपन्यासकार के प्रतिनिधि उपन्यासों में देखने को मिलता है। मृदुला गर्ग कृत 'चित्तकोबरा' उपन्यास में मुक्त काम सम्बन्धों का विश्लेषण मिलता है। इस प्रकार का विश्लेषण अमृता प्रीतम के 'जलते बुझते लोग' और गीतांजलि श्री द्वारा रचित उपन्यास 'तिरोहित' में मिलता है। फ्रायड के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति की मानसिक प्रक्रिया की व्यवस्था होती है जिसे 'अहं' नाम दिया जाता है। 'अहं' भाव का विश्लेषण आधुनिक युग की प्रमुख लेखिका दीप्ति खण्डेलवाल ने 'वह तीसरा' उपन्यास में प्रभूत मात्रा में किया है। 'अहं' दाम्पत्य सम्बन्ध के बीच में आ जाता है।

एडलर ने 'हीनता' की भावना को प्रमुख माना है प्रत्येक व्यक्ति में किसी न किसी प्रकार की कायिक, मानसिक अथवा क्रियात्मक कमी पायी जाती है, जिसे पूरी करने की निरन्तर चेष्टा करने पर भी व्यक्ति में एक प्रकार की हीन भावना बनी रहती है। 'हीन भावना' का विश्लेषण आधुनिक लेखिकाओं ने अपने प्रतिनिधि उपन्यासों में किया है इनके पात्र हीनता ग्रन्थि से परिचालित है। नासिरा शर्मा कृत 'शाल्मली' उपन्यास का पात्र 'नरेश'

इसी ग्रन्थि से ग्रसित है। इसके अतिरिक्त अन्य उपन्यासों में भी इस प्रकार के पात्र बहुतायत से पाये जाते है।

मनोविज्ञान की एक पद्धति मानसिक उदात्तीकरण है। विभिन्न मर्यादाओं के कारण व्यक्ति अपने नैसर्गिक प्रवृत्तियों का का दमन करता जाता है, उनको विभिन्न सामाजिक कार्यों के द्वारा व्यक्ति अभिव्यक्त करता है, यही उदात्तीकरण कहलाता है। यही उदात्तीकरण की भावना की अभिव्यक्ति प्रभा खेतान के 'छिन्नमस्ता' उपन्यास में देखी जा सकती है। फ्रायड के अनुसार मनुष्य अपनी दमित इच्छाओं को स्वप्न में पूर्ण करके सन्तुष्टि पाता है। उपन्यासों में स्वप्न विश्लेषण द्वारा भी पात्रों के मानसिक संघर्षों को उघाड़ा गया है। इस दृष्टि से आधुनिक युग की लेखिका जया जादवानी के उपन्यास 'तत्त्वमसि' प्रमुख है। जिसका कथानक स्वप्न के आधार पर लिखा गया है। मैत्रेयी पुष्पा के 'इदन्नमम्' उपन्यास का पात्र 'महेन्द्र' स्वप्नदर्शी पात्र है।

बदलते जीवन संघर्ष के कारण व्यक्ति में कुण्ठाओं का जन्म हुआ है कुण्ठाओं का विश्लेषण ऊषा प्रियवंदा कृत 'शेष यात्रा' उपन्यास में मिलता है उपन्यास की पात्र 'अनु' के माध्यम से कुण्ठित मन का विश्लेषण किया गया है। मैत्रेयी पुष्पा कृत 'चाक' उपन्यास के पात्र कुण्ठाओं द्वारा परिचालित हैं। 'व्यक्तित्व विघटन' असमान्य मनोविज्ञान का महत्त्वपूर्ण पक्ष है यह आधुनिक उपन्यासों में विशेष रूप से पाया जाता है। कृष्णा सोबती द्वारा रचित उपन्यास 'सूरजमुखी अँधेरे के' में 'रत्ती' का चरित्र इसी प्रकार का है। बचपन में 'रत्ती' के साथ बलात्कार हुआ जिसके कारण वह क्रूर, असहिष्णु हो गयी है। चित्रा मुद्गल द्वारा रचित 'एक जमीन अपनी' उपन्यास व्यक्तित्व विघटन का विश्लेषण किया गया है। पात्रों के अन्तर्द्वन्द्व का विश्लेषण चन्द्रकान्ता द्वारा लिखित 'बाकी सब खैरियत है' में प्रमुखता से किया गया है। इसी के साथ ही यह विश्लेषण आधुनिक युग की लेखिका सूर्यबाला कृत 'मेरे संधि पत्र' उपन्यास में मिलता है जिसमें दाम्पत्य जीवन के अन्तर्द्वन्द्व का विश्लेषण किया गया है।

आधुनिक उपन्यासों में पुरुष मनोविज्ञान और नारी मनोविज्ञान का चित्रण किया गया है। ममता कालिया द्वारा लिखित 'बेघर' उपन्यास में पति और पत्नी के चरित्र के प्रति सशंकित है। यही कारण उनके दाम्पत्य जीवन में दरार डालता है। मृदुला गर्ग द्वारा

लिखित 'कठगुलाब' में भी पुरुष मनोविज्ञान और नारी मनोविज्ञान का विश्लेषण किया गया है। नारी मनोविज्ञान का चित्रण सुषमा मुनीद्र कृत 'छोटी सी आशा', डॉ. नमिता सिंह के लेडीज क्लब और अनामिका के 'दस द्वारे का पींजरा' में किया गया है। आधुनिक उपन्यासों में पात्रों का चरित्र चित्रण करने के लिए मनोविकृत पात्रों की योजना की गयी है अलका सरावगी द्वारा लिखित 'कलिकथाः वाया बाईपास' उपन्यास का प्रमुख पात्र 'किशोर बाबू' मनोविकृत पात्र है जो सिर में चोट लगने के कारण हो गया है। कुसुम कुमार द्वारा लिखित 'पूर्वी द्वार' उपन्यास में दो परिवारों की मनोविकृत स्त्रियों की कथा को उकरने में समर्थ है।

अनुसंधान पद्धति–

मानव एक ऐसा जिज्ञासु और बुद्धिजीवी प्राणी है जो अपनी जिज्ञासा को शान्त करने के लिए निरन्तर खोज, शोध व अनुसंधान करता रहता है। मानव की यह जिज्ञासु प्रवृत्ति जन्मजात होती है जिसके कारण अनुसंधान उसके जीवन के हर क्षेत्र में चलता ही रहता है। साहित्य के क्षेत्र में चलने वाला अनुसंधान एक विशेष प्रकार का होता है क्योंकि यह साहित्य में विद्यमान समाज के यथार्थ को लेकर चलता है। श्रद्धा, लगन, निष्ठा व अथक परिश्रम से किया जाने के कारण अनुसंधान स्थायी ज्ञान प्राप्ति का एक सशक्त माध्यम भी है। अनुसंधान की अनेक पद्धतियाँ प्रचलन में हैं। मेरे शोध में आधुनिक लेखिकाओं के उपन्यासों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन किया जायेगा मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन हेतु मनोविश्लेषण पद्धति का प्रयोग किया जाएगा। इसके साथ ही विवेचनात्मक, वर्णनात्मक, आलोचनात्मक व विवरणात्मक पद्धतियों का भी अवलम्ब लिया जाएगा। अन्त में सम्पूर्ण शोध–विषय का निष्कर्ष दिया जायेगा।

प्रस्तुत शोध विषय से पूर्व हुआ कार्य–

शोध कार्य हेतु आधुनिक लेखिकाओं पर मेरे द्वारा चयनित विषय 'आधुनिक महिला उपन्यासकारों के प्रतिनिधि उपन्यासों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन' (सन् 1970 से आज तक) पर मेरी दृष्टि में अभी तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। उपन्यास साहित्य पर जिस भी विश्वविद्यालय में अनुसंधान कार्य व लघु शोध कार्य हुआ है वह मेरे शोध कार्य के विषय से बिल्कुल भिन्न है। मेरे शोध कार्य से पूर्व उपन्यास साहित्य पर जिन विषयों को लेकर

शोधकार्य किया गया है उसकी सूची नीचे दी जा रही है जिसके द्वारा यह निर्धारित हो जाता है कि मेरे शोध कार्य का विषय मौलिक व भिन्नता लिए हुए है।

1. प्रेमचन्दोत्तर मनोवैज्ञानिक उपन्यासों का शैल्पिक अध्ययन

शोध छात्र – सी. अजीता

शोध निर्देशक – एन मोहनन

कोचिन विश्व विद्यालय

2002

2. राजेन्द्र यादव के कथा साहित्य का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन

शोधा छात्रा – सोनिया सिरसाट

शोध निर्देशक – बालकृष्ण रोहितस्व शर्मा

गोवा यूनिवर्सिटी

3. हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में व्यक्तित्व बोध

शोध छात्र – गोविन्द एल. पटेल

शोध निर्देशक – डॉ० आर. के. सिंह

गुजरात विश्वविद्यालय

4. 'सूर सागर' के पात्रों का मनोवैज्ञानिक अनुशीलन

शोध छात्र – लाल बहादुर श्रीवास्तव

शोध निर्देशक – डॉ० राजेश्वर दयार सक्सेना

रविशंकर विश्वविद्यालय, रायपुर

5. मुक्तिबोध के साहित्य में प्रयुक्त पात्रों का मनोवैज्ञानिक अनुशीलन

शोध छात्रा – कु० संध्या दुबे

शोध निर्देशक – डॉ० वीरेन्द्र मिश्र

रविशंकर विश्वविद्यालय रायपुर

1990

6. जैनेन्द्र के कहानी साहित्य का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

शोध छात्रा – रेखा जैन

शोध निर्देशक – गीता अग्रवाल

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

1992

7. रविदास वाणी का मनोवैज्ञानिक अध्ययन

शोध छात्र – रविन्द्र कुमार

शोध निर्देशिका – प्रो० मीरा गौतम

कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र

2013

8. महिला उपन्यासकारों के प्रतिनिधि उपन्यासों का कथ्य एवं विमर्श

शोध छात्रा – अर्चना व्यास

शोध निर्देशक – डॉ० एन० डी० समाधिया

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

2002

9. साठोत्तरी हिन्दी महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में नायिका–भेद

शोध छात्रा – अलका भारद्वाज

शोध निर्देशक – डॉ० रमेश चन्द लवानिया

चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

2000

प्रस्तुत शोध विषय की व्याप्ति

शोध विषय का अनुसंधान सुचारू रूप से सम्पन्न करने हेतु विषय का नियोजित होना आवश्यक है। शोध कार्य की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने शोध विषय 'आधुनिक महिला उपन्यासकारों के प्रतिनिधि उपन्यासों का मनोविश्लेषात्मक अध्ययन' को छः अध्यायों में बाँटा गया है–

'आधुनिक महिला उपन्यासकारों के प्रतिनिधि उपन्यासों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन' (सन् 1970– आज तक)

भूमिका

प्रथम अध्याय : पृष्ठभूमि

(i) आधुनिक उपन्यासकार : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

(क) व्यक्तित्व :

1. मन्नू भंडारी
2. ममता कालिया
3. कृष्णा सोबती
4. मृदुला गर्ग
5. दीप्ति खण्डेलवाल
6. सूर्यबाला
7. चन्द्रकान्ता
8. उषा प्रियंवदा
9. नासिरा शर्मा
10. प्रभा खेतान
11. अमृता प्रीतम
12. मैत्रेयी पुष्पा
13. अलका सरावगी
14. चित्रा मुद्गल
15. सुषमा मुनीद्र
16. कुसुम कुमार

17. डॉ० नमिता सिंह

18. अनामिका

कृतित्व : एक परिचय

- मन्नू भण्डारी
- आपका बंटी (1971)
- ममता कालिया

  बेघर (1971)
- कृष्णा सोबती

  सूरजमुखी अँधेरे के (1972)
- मृदुला गर्ग

  चित्तकोबरा (1979)

  कठगुलाब (1996)
- दीप्ति खण्डेलवाल

  वह तीसरा (1976)
- सूर्यबाला

  मेरे संधीपत्र (1980)
- चन्द्रकांता

  बाकी सब खैरियत है (1983)
- उषा प्रियंवदा

  शेष यात्रा (1984)
- नासिरा शर्मा

  शाल्मली (1987)
- प्रभा खेतान

  छिन्नमस्ता (1993)
- अमृता प्रीतम

  जलते बूझते लोग (1994)

- मैत्रेयी पुष्पा

  इदन्नमम (1994)

  चाक (1997)

- अलका सरावगी

  कलि कथा : वाया बाईपास (1998)

- चित्रा मुद्गल

  एक जमीन अपनी (1990)

- सुषमा मुनीद्र

  छोटी सी आशा (2000)

- कुसुम कुमार

  पूर्वी द्वार (2004)

- डॉ० नमिता–सिंह

  लेडीज क्लब (2012)

- अनामिका

  दस द्वारे का पींजरा (2008)

- जया जादवानी

  तत्त्वमसि (2000)

- गीताजंलि श्री

  तिरोहित (2001)

(ख) आधुनिक उपन्यास : स्वरूप और परम्परा

द्वितीय अध्याय : मनोविज्ञान, स्वरूप, क्षेत्र एवं सिद्धान्त विवेचन

(क) मनोविज्ञान : स्वरूप परिभाषा एवं क्षेत्र

(ख) मनोविज्ञान और मनोविश्लेषण : पाश्चात्य एवं भारतीय परंपरा

(ग) मनाविज्ञान एवं मनोविश्लेषण : व्यावहारिक परिप्रेक्ष्य

(घ) मनोविज्ञान और हिन्दी उपन्यास

तृतीय अध्याय : आधुनिक महिला उपन्यासकारों के प्रतिनिधि उपन्यासो ंका मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन

- काम – वृत्ति का विश्लेषण
- अहं भाव का विश्लेषण
- हीनता ग्रन्थि
- आरोपण या प्रक्षेपण
- निर्देशन
- विस्थापन
- मानसिक उदात्तीकरण
- स्वप्न विश्लेषण
- कुण्ठित मन का विश्लेषण
- व्यक्तित्व विघटन का विश्लेषण
- बाल मन का विश्लेषण
- नारी मन का विश्लेषण
- अन्तर्द्वन्द्व का विश्लेषण
- अन्य

चतुर्थ अध्याय : आधुनिक महिला उपन्यासकारों के प्रतिनिधि उपन्याासों की पात्र योजना और चरित्र चित्रण

(क) पात्र योजना

- अपरिवर्तन शील पात्र
- गत्यात्मक पात्र
- बहिर्मुखी पात्र
- अन्तर्मुखी पात्र
- अहम् ग्रस्त पात्र
- हीनता ग्रस्त पात्र

- कुंठा ग्रस्त पात्र
- वासना परिचालित पात्र
- जटिल पात्र
- मनोरोग ग्रस्त पात्र
- अन्य

(ख) चरित्र चित्रण

- व्याख्यात्मक प्रणाली
- वर्णनात्मक प्रणाली
- विश्लेषणात्मक प्रणाली
- अभिनेयात्मक प्रणाली
- क्रियाकलाप द्वारा
- अन्य

पंचम अध्याय : आधुनिक महिला उपन्यासकारों के प्रतिनिधि उपन्यासों की भाषा–शैली

(क) भाषा

- काव्यात्मक भाषा
- प्रतीकात्मक भाषा
- सादृश्य विधान
- छोटे–छोटे अधूरे वाक्य
- मुहावरे और लोकोक्ति
- अन्य

(ख) शैली

- आत्मकथात्मक शैली
- वर्णनात्मक शैली
- पूर्व दीप्ति शैली
- पत्रात्मक शैली

- चेतना प्रवाह शैली
- मनोविश्लेषणात्मक शैली
- अन्य

षष्ठ अध्याय : आधुनिक महिला उपन्यासकारों के प्रतिनिधि उपन्यासों की उपलब्धियाँ एवं मूल्यांकन

उपसंहार

परिशिष्ट

- आधार ग्रन्थ
- संदर्भ ग्रन्थ
- पत्र–पत्रिकाएँ
- कोश

परिशिष्ट

आधार ग्रन्थ :

1. आपका बंटी : मन्नू भंडारी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006
2. बेघर : ममता कालिया, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1971
3. सूरजमुखी अंधेरे के, कृष्णा सोबती, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1972
4. चित्तकोबरा : मृदुला गर्ग, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1979
5. कठगुलाब : मृदुला गर्ग, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, 1996
6. वह तीसरा, दीप्ति खण्डेलवाल, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट नई दिल्ली, 1976
7. बाकी सब खैरियत है : चन्द्रकांता, नेशनल बुक ट्रस्ट, 1983
8. शेषयात्रा : उषा प्रियंवदा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1984
9. शाल्मली : नासिरा शर्मा, किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली, 1987
10. छिन्नमस्ता : प्रभा खेतान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009
11. मेरे संधी पत्र : सूर्यबाल, पराग प्रकाशन, नई दिल्ली, 1980
12. जलते बूझते लोग : अमृता प्रीतम, भारतीय साहित्य संग्रह, 1994
13. इदन्नमम : मैत्रेयी पुष्पा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009
14. चाक : मैत्रेयी पुष्पा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009
15. कलि कथा : वाया बाई पास, अलका सरावगी, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 2011
16. एक जमीन अपनी : चित्रा मुद्गल, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 2008
17. दस द्वारे का पींजरा : अनामिका, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 2008
18. तत्वमसि : जयाजादवानी, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 2000
19. तिरोहित : गीताजंलि श्री, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 2001

सहायक ग्रन्थ

1. हिन्दी उपन्यास का विकास : मधुरेश, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2011

2. हिन्दी गद्य–साहित्य : डॉ० रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी 2014

3. इलाचन्द्र जोशी का कथा साहित्य शिल्प एवं संवेदना : डॉ० मुक्ता नायडू, ज्ञान प्रकाशन, कानपुर, 2006

4. आठवें दशक की लेखिकाओं के उपन्यासों में व्यक्त स्त्री चरित्र डॉ० सविता चोखोबा किर्ते, विनय प्रकाशन, कानपुर, 2007

5. हिन्दी उपन्यासों पर पाश्चात्य प्रभाव : भारत भूषण अग्रवाल, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2001

6. आधुनिक और हिन्दी उपन्यास : इन्द्रनाथ मदान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1981

7. गिरिराज किशोर का उपन्यास साहित्य : एक अनुशीलन : डॉ० सुरेश चांगदेव सान्वेक– अन्नपूर्णा प्रकाशन कानपुर, 2004

8. हिन्दी उपन्यासों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन : डॉ० गिरधर प्रसाद शर्मा, इन्द्रप्रस्थप्रकाशन, दिल्ली, 1967

9. जैनेन्द्र कुमार चिंतन और सृजन : मधुरिमा कोहली : पराग प्रकाशन, दिल्ली, 1982

10. जैनेन्द्र और उनके उपन्यास : रघुनाथ सरन झलानी, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

11. हिन्दी उपन्यास प्रेमचन्दोत्तर काल : डॉ० राम शोभित प्रसाद सिंह ऋषभचरण जैन एवं सन्तति, नई दिल्ली, 1981

12. हिन्दी उपन्यास की प्रवृत्तियाँ : डॉ० शशिभूषण सिंघल, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 1980

13. सामान्य मनोविज्ञान : डॉ० प्रीति वर्मा, डॉ० डी० एन श्रीवास्तव, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 2005

14. आधुनिक कथा साहित्य और मनोविज्ञान – देवराज उपाध्याय साहित्य भवन प्रा० लि० इलाहाबाद, 1963

पत्र पत्रिकाएँ

1. आलोचना
2. समीक्षा
3. कथादेश
4. कथाक्रम
5. आजकल
6. वर्तमान साहित्य
7. साहित्य अमृत
8. नया ज्ञानोदय
9. हंस